संसद भवन से भी बड़े हाईकोर्ट डोम का वास्तु ऐसा कि जल्द न्याय मिले

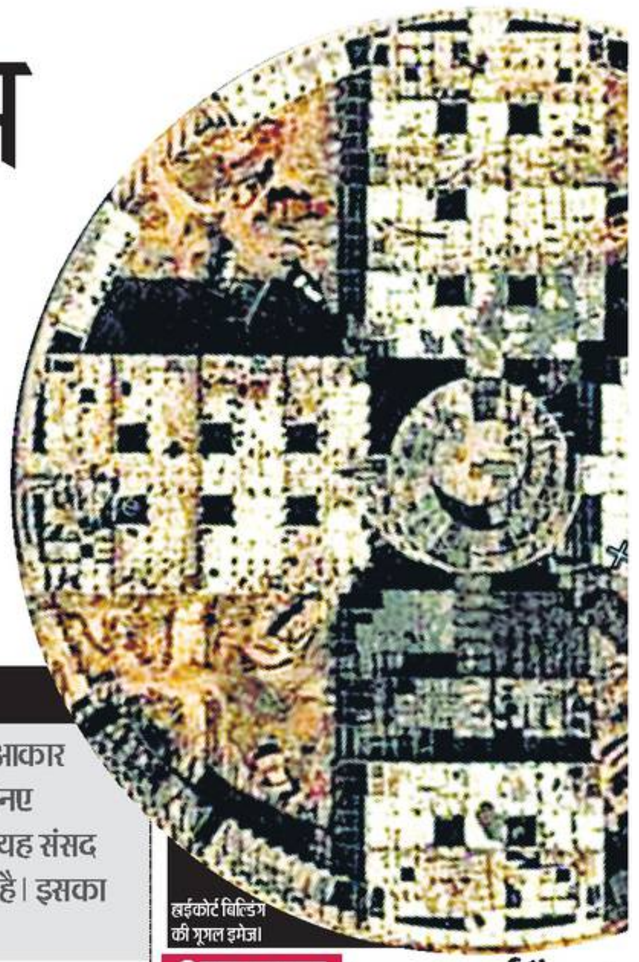

भास्कर विशेष

हाईकोर्ट की स्टेट ऑफ द आर्ट बिल्डिंग अपनी सभी सुविधाओं के साथ भविष्य की जरूरतें तो पूरी करेगी ही लेकिन खास बात है इसकी भव्यता जिसमें कई मायनों में यह संसद भवन और विधानसभा जैसे एतिहासिक भवनों से भी आगे है। बिल्डिंग का वास्तु भी बहुत खास है। कोर्ट रूम, जजेज चैंबर आदि सभी निर्माण वास्तुनुकूल इस तरह किए हैं कि परिवादियों को जल्द से जल्द फैसला मिल सके।' भास्कर की टीम ने इसे बनाने वाले विशेषज्ञों के साथ ही पूरी बिल्डिंग का अध्ययन किया।

हाईकोर्ट बिल्डिंग की गूगल इमेज।

'फॉर्म फॉलो फंक्शन'। आर्किटेक्चर की भाषा में इसका अर्थ है कि किसी भी इमारत या निर्माण की डिजाइन व आकार उसके भीतर होने वाले भावी कार्यों व उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए होना चाहिए।

-प्रसिद्ध अमेरिकी आर्किटेक्ट 'लुईस सुलेवान' के सूत्र को राजस्थान हाईकोर्ट के नए भवन के निर्माण में उतारने कोशिश की है। झालामंड बाइपास के पास बन रहे हाईकोर्ट निर्माण में इसी सूत्र को अपनाया गया है।

मनीष बोहरा | जोधपुर

हाईकोर्ट का मुख्य भवन वास्तु के हिसाब से सटीक बनाया गया है। गोल आकार से भवन पर वास्तुदोष नहीं लगता। भवन के वास्तु के हिसाब से उम्मीद है कि निर्णय जल्दी होंगे। वास्तु की विशेषताओं में मुख्य न्यायाधीश का चैंबर ईशान दिशा यानि नॉर्थ ईस्ट में बनाया है। ये वास्तु के हिसाब से सटीक है। भव्य डोम (120 फीट व्यास) संसद भवन के केंद्रीय कक्ष से (98 फीट व्यास) भी बड़ा है। यहां आने वाले पक्षकारों को सुकून मिलेगा। मामले भी जल्द निष्पादित होंगे। भवन के पीछे एड्वोकेट्स चैंबर की इमारत वास्तु के हिसाब से मुख्य भवन से ऊंची है। सभी कोर्ट रूम प्लस के आकार में हैं। ज्योतिष व वास्तुविद पं. रमेश भोजराज द्विवेदी ने बताया कि ईशान कोण में देवताओं का वास होता है, मुख्य न्यायाधीश भी न्याय के देवता ही हैं। ऐसे में ईशान कोण में कोर्ट चैंबर उचित है। मुख्य इमारत का निर्माण पहले चरण में हुआ। इसमें मुख्य भवन के साथ एड्वोकेट्स चैंबर बन रहे हैं। द्वितीय चरण में तीसरी मंजिल, मल्टीलेवल पार्किंग बनेंगे। निर्माण में दिनरात 250 मजदूर जुटे हैं। मुख्य भवन निर्माण राजस्थान स्टेट रोड डवलपमेंट कॉर्पोरेशन की देखरेख में जारी है। 14 एजेंसियां अलग काम कर रही हैं। स्ट्रक्चल में प्रदीप गुप्ता की डिजाइन, नई दिल्ली की वरिंद्रा कंस्ट्रक्शन कंपनी, फिनिशिंग में जयपुर की एएल लालपुरिया, सैनेट्री में कौशिक ब्रदर्स, एलिवेशन में मुंबई की डीके इंफ्रास्टक्चर और वुडवर्क में रामा कंट्रक्शन काम कर रही हैं।

कंसेप्ट | कंपीटिशन से सलेक्टेड डिजाइन पर छीतर के पत्थर की दूसरी बड़ी बिल्डिंग

18 डिजाइन में से सरकारी आर्किटेक्ट का मॉडल चुना

बिल्डिंग के लिए सरकार ने कंपीटिशन रखा था।भवन के लिए 20 कोर्ट पर प्रोजेक्ट मांगे गए। 18 ने एप्लाई किया था। अंत में सरकार के चीफ आर्किटेक्ट टीआर शर्मा का डिजाइन चुना गया।

अभी बना है जी प्लस2, एक मंजिल का स्कोप छोड़ा

उम्मेद भवन के बाद यह इतनी बड़ी पहली इमारत होगी, जो पूरी तरह जोधपुर पत्थर से बनी है। इसमें 282 पिलर का निर्माण हुआ है। यह जी प्लस 2 बना है और भविष्य को देखते हुए एक मंजिल की जगह छोड़ी गई है। 33 इमारतों के मिलाकर इसका निर्माण हुआ हैं। इस पर 187 करोड़ रुपए खर्च होंगे।

जोन 3 का भूकंप झेलने में सक्षम

जोधपुर का इलाका भूकंप के जोन 2 में आता है। इसलिए निर्माण की मजबूती जोन 3 को लेकर की गई है। ताकि भविष्य में इसकी सुरक्षा को लेकर कोई समझौता ना हो और यह शान से खड़ा रह सकें।

कंपेरिजन | विधानसभा व संसद से भी बड़ा कंस्ट्रक्शन एरिया

नए हाईकोर्ट भवन की ही तरह केंद्रीय डोम एवं चारों तरफ वृत्ताकार आकार वाला प्रदेश का नया विधानसभा भवन एवं देश का संसद भवन भी है। नए हाईकोर्ट से अगर इनकी तुलना की जाए तो निर्माण क्षेत्र के मामले में यह संसद भवन का तकरीबन चार गुणा व विधानसभा भवन से डेढ़ गुणा अधिक है। इसका विशाल डोम (120 फीट व्यास) भी दोनों से काफी बड़ा है।

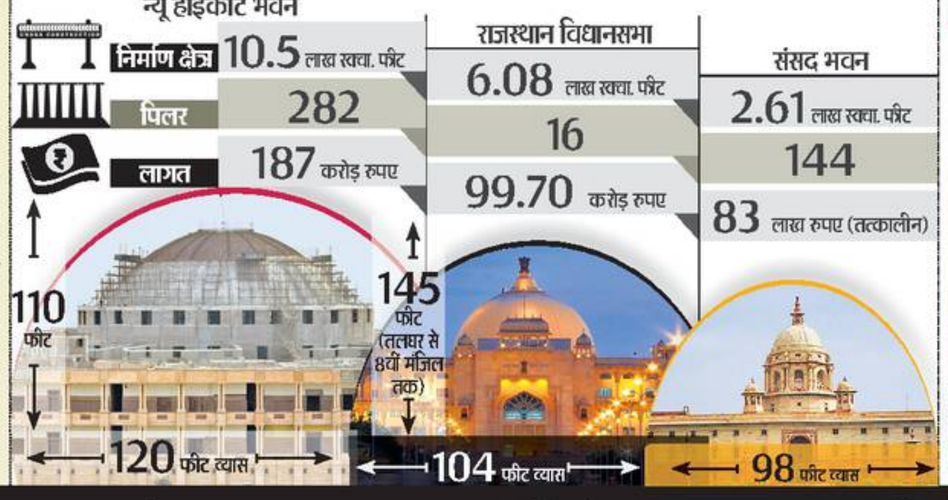

	न्यू हाईकोर्ट भवन	राजस्थान विधानसभा	संसद भवन
निर्माण क्षेत्र	10.5 लाख स्क्वा. फीट	6.08 लाख स्क्वा. फीट	2.61 लाख स्क्वा. फीट
पिलर	282	16	144
लागत	187 करोड़ रुपए	99.70 करोड़ रुपए	83 लाख रुपए (तत्कालीन)

भास्कर एक्सपर्ट्स पैनल

हाईकोर्ट बिल्डिंग को मूर्त रूप देने वाले आर्किटेक्ट और इंजीनियर्स ने भास्कर के पाठकों के लिए जुटाया यह ब्यौरा

टीआर शर्मा चीफ आर्किटेक्ट

इन्हीं के डिजाइन पर निर्माण हुआ निर्माणकाल में सुपरविजन व संशोधन करते रहे।

सुरेश शर्मा एक्सईएन, आरएसआरडीसी

हाईकोर्ट भवन का सिविल व इंटीरियर का पूरा निर्माण इन्हीं की देखरेख में हुआ है।

वीके वर्मा एक्सईएन, पीडब्ल्यूडी

इलेक्ट्रिसिटी, लाइटिंग, फायर सेफ्टी व सुरक्षा इंतजाम इनकी देखरेख में हुए।

मल्टी फैसिलिटी कैंपस | वकीलों के 400 रूम, जजेज का अलग कॉरिडोर, 2000 वर्ग मीटर की लाइब्रेरी

400 कमरों का एडवोकेट्स चैंबर, 1600 लोग बैठ सकेंगे

मुख्य भवन के पीछे एडवोकेट्स चैंबर बनाने प्रस्तावित हैं। इस इमारत में 400 कमरे चार सीट वाले बनाए जाएंगे। इनमें करीब 1600 एडवोकेट्स आराम से बैठ सकेंगे।

25 कोर्ट होंगी नए भवन में

नए भवन में 22 कोर्ट पहली मंजिल पर बनाई गई है। इसके अलावा 1 सीजे कोर्ट व 2 लोक अदालतें बनाई गई हैं, जो ग्राउंड फ्लोर पर होगी। न्यायाधीशों के अलग से रेस्ट रूम, ऑफिस और फ्रेश रूम हैं। ये कोर्ट रूम से अटैच हैं। साथ ही पीरस का रूम और ऑफिस भी होगा।

वुडन फ्लोरिंग, साउंड सैंसिंग भी

सारे कोर्ट रूम में वुडन वर्क किया गया है। फ्लोर पर भी वुड लगाया गया है। आवाज प्रतिध्वनित नहीं हो इसके लिए भी व्यवस्था की गई। साथ ही दो तरफ नेचुरल लाइट के लिए खिड़कियां भी हैं।

हाईकोर्ट भवन का मॉडल

न्यायाधीशों के लिए अलग कॉरिडोर

नए भवन में न्यायाधीशों की गोपनीयता और सुरक्षा का पूरा ख्याल रखा गया है। पहली मंजिल में कोर्ट के दोनों तरफ न्यायाधीशों के लिए अलग से साढ़े छह फीट के कॉरिडोर का निर्माण किया गया है। जो उन्हें भवन के अंदर लेकिन आमजन से अलग करता है।

700 फीट के गलियारे

प्रथम तल पर 30 फीट चौड़े व 700 फीट लंबे गलियारे हैं। यह गलियारे कोर्ट रूम के बाहर होंगे। डोम के नीचे दोनों गलियारे प्लस आकार बनाते हैं। यहां स्टेच्यू ऑफ जस्टिस लगेगी। वेटिंग के लिए कुर्सियां भी लगेंगी।

विजिटिंग रूम और मीटिंग रूम

मुख्य न्यायाधीश की कोर्ट के पीछे ही विजिटिंग रूम और मीटिंग रुम बने हैं। यहां न्यायाधीशों से मिलने वाले आकर अपांइटमेंट के अनुसार इंतजार एवं न्यायधीशों से मुलाकात कर सकेंगे।

4 लाइब्रेरी, मेडिकल विंग व म्यूजियम भी

ग्राउंड फ्लोर पर 2000 स्क्वायर मी. की लाइब्रेरी है। तीन छोटी लाइब्रेरियां अलग होंगी। पूरी योजना ई-लाइब्रेरी के तहत है। किताब को ऑटो गाइडेड व्हीकल से इसे चंद मिनटों में पहुंचाया जाएगा। इमारत में ऑडिटोरियम हॉल, मेडिकल विंग, फिजियोथैरेपी कक्ष, कॉरपेटिव स्टोर, म्यूजियम का निर्माण भी करवाया गया है।

पांच रास्ते होंगे भवन में प्रवेश के

मुख्य भवन में प्रवेश के लिए न्यायाधीशों, एडवोकेट्स एवं आमजन के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गई है। एक प्रवेश द्वार न्यायधीशों के लिए, दो गेट आमजन के लिए और दो गेट एडवोकेट्स के लिए आरक्षित रखे गए हैं। खास बात यह है कि इन सभी की आवश्यकतानुसार आगे गलियारे और सीढ़ियां दी गई हैं।

जजों के लिए 4 और अन्य के लिए 8 लिफ्ट

भवन में न्यायाधीशों के लिए 4 लिफ्ट लगाई गई हैं, जो उन्हें सेपरेट गलियारे में ले जाते। आमजन के लिए 8 लिफ्ट लगाई गई हैं। नई इमारत में एक से दूसरी कोर्ट की अधिकतम दूरी 440 फीट रखी गई है। वकीलों को एक कोर्ट से दूसरी कोर्ट जाने में अधिकतम दो मिनट ही पैदल चलना होगा।

एनर्जी एफिशिएंट | एलईडी व सोलर प्लेट्स से बचेगी बिजली, कूलिंग प्लांट व नेचुरल एयर से फैलेगी ठंडक, फायर से बचाएगा सेफ्टी सिस्टम

2000 टन का कूलिंग प्लांट

2000 टन का ये शहर का सबसे बड़ा कूलिंग प्लांट होगा। 1600 टन रनिंग में व 400 स्टैंड बाय रहेगा। साथ ही एयर हैंडलिंग यूनिट के जरिए भूतल टनल की वातावरण से कुछ डिग्री विपरित हवा को सर्कुलेट किया जाएगा।

सोलर प्लेट्स से 20% बिजली मिलेगी

नए भवन की छत पर सोलर प्लेट लगाई जाएंगी।। इनसे आवश्यकता की कुल बिजली की 20 प्रतिशत मिलेगी। पहली मंजिल पर नेचुरल लाइट होगी, ताकि बिजली की खपत कम से कम हो।

3.5 लाख ली. पानी स्टोरेज

छत पर 25 हजार ली. के चार टैंक व नीचे ढाई लाख ली. क्षमता का हौद है। 50 केएलडी का सीवरेज प्लांट भी बना है। सीवरेज से ट्रीट पानी का उपयोग ग्रीनरी के लिए होगा।

ऑटोमेटिक फायर सेफ्टी सिस्टम

सुरक्षा के लिए फायर सेफ्टी सिस्टम लगा है। हर फ्लोर और कमरे में स्प्रिंकलिंग सिस्टम लगाया गया है, जिसमें 58 प्रतिशत तापमान होने पर बौछार आने लगती है। इसके अलावा सीसीटीवी कैमरे पूरे परिसर में लगाए जाएंगे।

एलईडी व टी-5 लाइट्स, नेचुरल एयर

हाईकोर्ट की नई बिल्डिंग में सीएफएल की जगह एलईडी और टी-5 लाइट्स का इस्तेमाल किया गया है, इसकी खासियत यह है कि यह 28 वॉल्ट की होने के साथ प्रकाश अधिक देती है। इसके अलावा भवन में वायरिंग भी बहुत कम की गई है। इसके लिए एल्युमिनियम पट्टियों का इस्तेमाल हुआ है।

मल्टीलेवल पार्किंग | भूतल से दो मंजिल तक हजारों वाहनों की पार्किंग

2400 वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था

यहां मल्टीलेवल पार्किंग प्रस्तावित है। इसके लिए दो मंजिला इमारत बनेगी। इसमें 1800 कार और 853 टू व्हीलर पार्क हो सकेंगे। इमारत भवन के पीछे एक अन्य पार्किंग और एडवोकेट्स के लिए भी अलग से पार्किंग बनेगी।

जजेज के लिए 60 कारों की भूतल पार्किंग

हाईकोर्ट जजों के लिए भवन के नीचे भूतल में अलग से पार्किंग की व्यवस्था की गई है। इसमें करीब 60 कारें खड़ी की जा सकेंगी। कार से सीधे वो लिफ्ट और वहां से प्राइवेट गलियारे में आ सकेंगे।

फोटो | पूरणसिंह, लेआउट | फतेहसिंह परिहार, एडिटिंग | वीरेंद्रसिंह चौहान